६. सुख - दुःख

I. प्रश्न उत्तर

प्र.१. सुख - दुःख कविता का सारांश लिखिए ।

उ. **कवि परिचय** : 'सुख - दुःख ' नामक कविता के कवि **''श्री सुमित्रानंदन पंत''** हैं । आपका जन्म सन् १९०० में हुआ और मृत्यु १९७७ में हुई । आप छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । आपका जन्म अल्मोडा के कूर्मांचल प्रदेश में कौसानी गाँव में हुआ था । 'चिदंबरा' काव्य संकलन पर आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ । आप की तुलना तेलुगु साहित्य में देवुलपल्लि कृष्ण शास्त्री से की जाती है ।

प्रमुख रचनाएँ - वीणा, ग्रंथी, पल्लव आदि ।

सारांश : कवि ''श्री सुमित्रानंदन पंत'' जी का कहना है कि सदा सुख और दुःख दोनों दुःखदायक है। सुख - दुःख के मधुर मिलन से मानव जीवन परिपूर्ण बन जाता है । कवि कहते हैं कि '' मैं सदा सुख नहीं चाहता और सदा दुःख भी नहीं चाहता । मानव जीवन में सुख - दुःख की आँख मिचौनी जैसा खेल चलते रहना चाहिए । तभी हमारा जीवन परिपूर्ण होता है ।

मनुष्य का जीवन अति सुख - दुःख से पीडित है और अति सुख से भी पीडित है । इसलिए मानव जीवन में सुख और दुःख दोनों का समान रुप से बँटवारा आवश्यक हैं । मानवजीवन प्रभात और संध्या का आँगन है । विरह - मिलन और हँसी - आँसुओं का संगम हैं । इस प्रकार मानव जीवनमें सुख - दुःख का क्रम से आना - जाना आवश्यक है ।

विशेषताएँ :

इस कविता में यह बताया गया है कि अति सुख और दुख दोनों दुखदायक है । सुख - दुख के मधुर मिलन से मानव जीवन परिपूर्ण होता है ।

प्र.२. मानव जीवन में सुख - दुःख का बँटवारा क्यों आवश्यक है ?

उ. सुख - दुःख के मधुर मिलन से मानव जीवन परिपूर्ण होता है । इसलिए मानव जीवन में सुख और दुःख दोनों का समान रुप से बँटवारा आवश्यक हैं । मानव जीवन प्रभात और संध्या का आँगन है । विरह - मिलन और हँसी - आँसुओं का संगम हैं । इसी प्रकार मानव जीवन में सुख - दुःख का क्रम से आना - जाना आवश्यक है ।

प्र.३. अति सुख और दुःख के बारे में कवि का क्या विचार है ?

उ. सुमित्रानंदन पंत‘‘ जी का कहना है कि सदा सुख और दुःख से पीडित है । हमेशा सुख दुःख को भोगते रहने से मानव एक सच्चा इन्सान नहीं बन सकता, वह घमंडी बन जाता है । हमेशा दुःख को भोगते रहने से मानव निराशा में पड जाता है और जिन्दगी में कुछ नहीं कर पाएगा । इसीलिए अति सुख और अति दुःख दोनों में वांछनीय नहीं है । दोनों के मधुर मिलन से मानव जीवन परिपूर्ण बन जाता है ।

***

I. विलोम शब्द लिखिए ।

१.	सुख	×	दुःख	४.	मानव	×	दानव
२.	मधुर	×	कटु	५.	मिलन	×	विरह
३.	साँझ	×	उषा	६.	जन्म	×	मृत्यु

II. पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

१.	सुख	-	आराम,	आनंद
२.	दुःख	-	पीड़ा,	कष्ट
३.	ओझल	-	गायब,	अदृश्य
४.	जग	-	संसार,	विश्व
५.	आनन	-	चेहरा,	मुख
६.	चिर	-	सदा,	हमेशा

III. वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

१. मानव - मनुष्य

मानव के जीवन में सुख दुःख आते जाते रहते है ।

२. घन - बदल

चंद्रमा घन के पीछे छिप जाते है ।

३. उषा - सुबह

सूर्योदय के होते ही उषा का आगमन होता है ।

IV. संधि - विच्छेद ।

१.	महर्षि	-	महा	+	ऋषि
२.	काव्यधारा	-	काव्य	+	धारा

३. पुरस्कार - पुरः + स्कार

V. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. 'सुख - दुःख कविता के कवि कौन है ?

उ. सुमित्रानंदन पंत

२. सुमित्रानंदन पंत जी किस काव्यधारा के कवि थे ?

उ. छायावादी

३. सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म कब हुआ ?

उ. १९०० ई. में ।

४. बचपन से ही उनका आकर्षण किस ओर था ?

उ. प्रकृति

५. सुमित्रानंदन पंत जी को किस काव्य संकलन पर भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार मिला ?

उ. चिदम्बरा

६. सुमित्रानंदन पंत जी ने किस पर चिंतन किया ?

उ. मानव समस्याओं पर ।

७. सुमित्रानंदन पंत जी क्या नहीं चाहते थे ?

उ. चिर दुःख, चिर सुख ।

८. मानव का जीवन किसके मिलन से परिपूर्ण होता है ?

उ. सुख - दुख के मिलन से ।

९. बादलों के पीछे कौन छिप जाता है ?

उ. चाँद

१०. "घन" शब्द का बँटवारा अत्यंत आवश्यक है ?

उ. सुख - दुख

११. सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म किस प्रदेश में हुआ ?

उ. कुर्मांचल प्रदेश में ।

१२. सुमित्रानंदन पंत जी की मृत्यु कब हुई ?

उ. १४७७

***